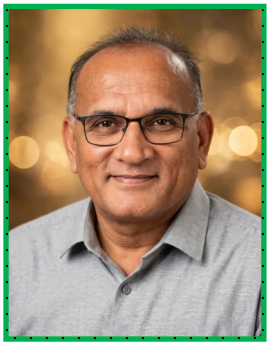
ISSN:2583-8849



देवीलाल जोशी
डुंगरपुर, राजस्थान

सत्य समझाने दीजिए

बंजर ज़मीं पर बीज बिखेरें है ,वक्त आने दीजिए
भावों की फसल लहलहाएगी,ऋतु आने दीजिए।।

उम्मीद पर जहां टिका है , क्यूं निराश होकर जीएं
बदलेगा भाग्य कर्म से सार्थक प्रयास आने दीजिए।।

माना ,वक्त के थपेड़ो,अपनो ने , लहूलूहान किया हो
कांटों संग कमल शहद सा अमृत मंथन पाने दीजिए।।

यह जीवन है,ख्वाहिश रूचि,मनभावन प्रोग्राम नहीं
संघर्ष ध्यान प्रकृति साधना,कर्मफल मुस्कराने दीजिए।।

जीवन परमात्मा का , जिए जग ,भाग्य,दोस्त भरोसे
कैसे सत्य सुख पाएं,जीवन सत्य को समझाने दीजिए।।

इसने-उसने कहा सबने कहा यही तो अज्ञान गुलामी है
जीवन भर ढोते हांफते रहे-सत्य भी समझ आने दीजिए।।

सभ्यता संस्कृति मंतमतातर मानव निर्मित व्यवस्था है
आत्म मंथन चिंतन दौर दुध में घी है समझ आने दीजिए।।

सत्य बोध स्व विवेक जाग्रत चित्त की अपनी खोज यात्रा
साथ रहे समाज के पर स्व जीवन को आनंद आने दीजिए।।



सुभाष अग्रवाल साकी
उदयपुर

सपने कहीं टूट न जाएं।

देवों की यह भूमि है, पर्वतों में अध्यात्म अथाह
गंगा, जमुना, कृष्णा, कावेरी नदियों का प्रवाह

हिमगिरि सा ऊंचा मनोबल, मंदिर सा रहता शांत
धीरज रख आगे बढ़ता, मिले अवरोधों के उपरांत

विश्व गुरु बनने के सपने, आंखों में हैं बसे सदैव
सपने कहीं टूट न जाएं, करें वंदना देवों के देव।

ज्ञान की कुछ कमी नहीं, परिश्रम को तत्पर हरदम
जुट गया युवा देश का, चांद पर लहराने परचम।

सपने सजाए हैं बनने, फिर से सोने की चिड़िया
जोड़ रहा हर युवा मौन, छोटे सपनों की कड़ियाँ।

विश्वास भरे मन से हम, मंज़िल की ओर कदम बढ़ाएं
रहे न मन में शंकाए कि, 'सपने कहीं टूट न जाएं'।